

श्री दृख्य वाणी गायन



साथ जी सोभा देखिए

साथ जी सोभा देखिए, करे कुरबानी आतम। वार डारों नख सिख लों, ऊपर धाम धनी खसम।। करी कुरबानी तिन कारने, परीछा सबकी होए। करे कुरबानी जुदे जुदे, सांच झूठ ए दोए।। कुरबानी को नाम सुन, मोमिन उलसत अंग। पीछे हुते जो मोमिन, दौड़ लिया तिन संग।। मोमिन बड़ा मरातबा, सो अब होसी जाहेर। छिपे हुते दुनियां मिने, सो निकस आए बाहेर।। जिन दिस मेरा पिउ बसे, तिन दिस पर होऊं कुरबान। रोम रोम नख सिख लो, वार डारों जीव सों प्रान।। सूरातन सिखयन का, मुख थें कहयो न जाए। महामत कहें सो समया, निपट निकट पोहोच्या आए।।



